जानकी पूर्ति

ब्यूटी पार्लर से खुशहाल हुई जिंदगी

हाइलाइटर : पश्चिम सिंहभूम के खूंटपानी प्रखंड की जानकी पूर्ति केंदुलोटा गांव की रहने वाली हैं। एक समय गरीबी का आलम यह था कि घर में बमुश्किल दो वक्त की रोटी जुट पाती थी। लेकिन सखी मंडल से जुड़ने के बाद उनमें नया आत्मविश्वास आया, जिसने आज उन्हें एक सफल महिला उद्यमी के रूप में पहचान दी है। उनका ब्यूटी पार्लर इलाके की महिलाओं को खूब लुभाता है। वे भावविह्वल होकर कहती हैं, जेएसएलपीएस ने एक मां की तरह मुझे सफल होने के लिए पहला कदम उठाना सिखाया।

समूह की सहायता से अपने जीवन में सुखद बदलाव लाने वाली जानकी पूर्ति उन महिलाओं के लिए मिसाल हैं, जो यह सोचती हैं कि गरीबी को मात देना मुश्किल है। जानकी ने दिखाया है कि अगर एक महिला ठान ले, तो वह कुछ भी कर सकती है। जानकी ने एक शर्मीली घरेलू महिला से सफल उद्यमी तक का सफर तय किया है। एक समय था, जब उनके जीवन में भी ढेर सारी निराशाओं का अंधेरा था, आजीविका मिशन से जुड़ कर उन्होंने अपनी तकदीर खुद लिखने की ठानी और आज वे अपने इलाके में कई सारी महिलाओं के लिए एक मिसाल बन गयी हैं।

पश्चिम सिंहभूम के खूंटपानी प्रखण्ड के केंदुलोटा गाँव की रहने वाली जानकी पूर्ति अपने इलाके में एक सफल उद्यमी के रूप में जानी जाती हैं। 26 साल की जानकी पांड्रासाली बाजार में अलीशा ब्यूटी पार्लर चलाती हैं। यह पार्लर ही जानकी पूर्ति की कमाई का जरिया है, जिससे वे अपने परिवार को चला रही हैं। लेकिन यहां तक पहुंचने के लिए जानकी के संघर्ष को जानना जरूरी है।

जानकी पूर्ति की सफलता का दौर 2010 से शुरू होता है। उन दिनों वे सिर्फ एक घरेलू महिला हुआ करती थीं और उनके पति खेती बारी किया करते, जिससे किसी तरह दो वक्त की रोटी जुट पाती थी। उन्हें अपने ससुर से घर खर्च के लिए मुश्किल से महीने के 100 रुपये मिलते थे। जानकी को भरोसा था कि उनके जीवन में भी एक नई सुबह जरूर आएगी। साल 2013 में इंतजार की घड़ियां समाप्त हुई और जानकी आजीविका मिशन से जुड़कर नूतन महिला समिति की सदस्य बन गयीं।

जानकी बताती हैं कि ''वर्ष 2013 से पहले भी मैं सखी मंडल की सदस्य थी, लेकिन कभी भी अपने और सखी मंडल पर भरोसा नहीं था। मुझे कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मैं खुद कुछ करने की कोशिश करूँ, क्योंकि हमारे समूह की बचत किसी नए व्यवसाय को शुरू करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। वहीं, जब हमारा सखी मंडल झारखण्ड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी के अंतर्गत आया, तब मुझे एक बड़ा अंतर महसूस हुआ। उसने मुझे एक माँ की तरह सफलता की तरफ पहला कदम उठाना सिखाया, हमें हर जरूरी प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया, जिसके बूते हम खुद में आत्मविश्वास जगा सकें।''

सखी मंडल से जुड़ने के बाद 6000 रूपये का ऋण लेकर जानकी ने अपना नामांकन सिलाई सीखने व ब्यूटीशियन के कोर्स में कराया और यहीं से बदलाव की कहानी शुरू हुई। जानकी का अपना ब्यूटी पार्लर खोलने का सालों पुराना सपना अब सच होता नजर आने लगा। ब्यूटी पार्लर में काम सीखने के साथ-साथ जानकी ने अपने गाँव में अपना हुनर अजमाना शुरू कर दिया, ताकि वह अपने ऋण को समय पर वापस भी कर सकें और नए ऋण के लिए आवेदन करने के योग्य हो सकें। छह महीने का कोर्स पूरा करने के बाद उन्होंने सखी मण्डल के सीआईएफ (सामुदायिक निवेश फंड) से तीस हजार रुपये कर्ज लेकर बाजार में एक महिला ब्यूटी पार्लर खोला। जानकी आज अपने इलाके में पार्लर वाली दीदी के नाम से जानी जाती हैं।

ब्यूटी पार्लर के बिजनेस से शुरू हुआ जानकी का व्यवसाय बुलंदियों को छू रहा है। ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को जोड़ने के लिए जानकी ने सिलाई का काम भी शुरू कर दिया है। अपने व्यापार को बढ़ाते हुए एवं ग्राहकों की मांग के मुताबिक जानकी ने कॉस्मेटिक उत्पादों को भी बेचना शुरू किया है। आज जानकी लघु उद्यम के माध्यम से करीब दस हजार रुपये हर महीना कमा लेती हैं।

अलीशा ब्यूटी पार्लर में जानकी से बात करते हुए हमारी मुलाकात मनमती से हुई जो अलीशा ब्यूटी पार्लर की नियमित ग्राहक हैं। मनमती बताती हैं कि पहले हम सभी को इन सब काम के लिए चाईबासा जाना पड़ता था, जिसमें समय और रुपये ज्यादा खर्च होते थे, लेकिन अलीशा ब्यूटी पार्लर खुल जाने से हमारा काम आसान हो गया है। जानकी जी के हाथों में जो हुनर है, उससे हमें पूरी संतुष्टि मिलती है। अब हम इस काम के लिए चाईबासा नहीं जाते।

कभी देहरी के अंदर एक आम घरेलू गृहिणी का जीवन जी रहीं जानकी अब एक सफल उद्यमी हैं। अब तक वे अपने व्यापार के लिए सखी मंडल से कुल 50,000 रुपये की राशि ले चुकी हैं और समय पर ब्याज के साथ मूल राशि वापस लौटा चुकी हैं। अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकी बताती हैं, मैं अपने पार्लर को और बढ़ाना चाहती हूँ। इसे एक नया रूप देना चाहती हूं। मैं विशेषज्ञ ब्यूटीशियन कोर्स करना चाहती हूं और अपने सेंटर को झारखंड के हर बड़े शहर में खोलना चाहती हूं। जानकी की सफलता की इस कहानी से आज खूंटपानी की सैकड़ों महिलाएं प्रभावित हैं। वे सखी मंडल की बहनों के लिए एक मिसाल बन गयी हैं।